IAS Mentorship

With Riyasat Ali Sir

PARAMETERS FOR ESSAY COPY EVALUATION

		VERY GOOD	GOOD	AVERAGE	SUBSTANDARD
1.	Understanding on The Topic	✓			
2.	Context of Introduction & Relevance	✓			
3.	Understanding on the demand of ESSAY	✓			
4.	**Body Part:**				
	Contextual Clarity	✓			
	Diversity of Dimensions		✓		
	Relevance of Content/ Quotation		✓		
	Presentation & Organisation of Essay		✓		
	Connectedness & Flow		✓		
	Clarity of massage/articulation and communication		✓		
	Logical Structure and Analysis		✓		
5.	Language Competence		✓		
6.	Context of Conclusion & Relevance	✓			
7.	Legibility of hand writing		✓		

Riyasat Ali
21/07/2025

61/125

IAS MENTORSHIP
With
Riyasat Ali Sir

प्रिय Ravi Raaz, – overall इस निबन्ध में आपका प्रयास सराहनीय है। निबन्ध पृष्ठों पर दिये गये सभी feedback को ध्यान पूर्वक पढ़ें।

① परिचय – परिचय आपने निबन्ध के theme के हिसाब से अच्छा व प्रासंगिक लिखा है। आपने एक Real story से start किया। और theme से connected चर्चा करते हुए अन्तिम Paragraph में निबन्ध के विषय का पुनः स्थापन (Re-imposition) किया है। इससे परिचय पूर्णरूप से सार्थक बन जाता है।

② Diversity in Dimensions: – निबन्ध में विभिन्न पहलुओं पर logical discussion व suitable examples व Quotation से diverse points of views देखने

को मिल रहा।

(3) Clarity of Communication and Connectedness :- लगभग सभी पहलुओं पे आपका मत Clear है। और सभी dimension में आपने निबन्ध के विषय को सुचारु रूप से पुनःस्थापित किया है। Keep it up.

(4) Presentation :- यहाँ पर भी आपका प्रयास सही है। आपने परिचय के बाद thesis statement में निबन्ध की दिशा दिया था। जो clarity देता है कि आने वाले पृष्ठों पे क्या चर्चा होने वाला है।

→ logical discussion & Counter Arguments पे भी आपने अपना मत thematically Connected Manner में रखा है।

(5) सुझाव - एक Dimension की चर्चा को कई छोटे-छोटे Paragraph में लिखने पर Communication flow या Connectedness week होने की संभावना होती है। बेहतर है कि दो Paragraph में लिखें।

(6) Conclusion :- निष्कर्ष आपने अच्छा लिखा है। आपने अपना logical & suggestive opinion के साथ चर्चा करते हुए एक suitable Quote के साथ निबन्ध को End किया है।

- Further improvement के लिये प्रयासरत रहें। जबतक "मंजिल न मिल जाये",

"कामयाबी की शुभकामनायें"

Riyasat Ali
21/07/2025

Student Name: RAVI RAAZ
Topic:
Date: 18/07/025

Q. "जीवन का लक्ष्य स्वयं को खोजना नहीं, बल्कि स्वयं को बनाना है"

आज से करीब 2500 वर्ष पूर्व जब 'महात्मा बुद्ध' विचरण करते हुए 'मगध के घने जंगलों' से गुज़र रहे थे, उनका सामना 'अँगुलीमाल' नामक एक खूंखार डाकू से हुआ। 'अँगुलीमाल' न केवल लूटपाट करता अपितु अपने शिकार के अंगुली काट कर एक माल में पिरो कर अपने गले में धारण भी करता। ऐसे में 'अँगुलीमाल' ने महात्मा बुद्ध को रुकने को कहा किन्तु 'महात्मा बुद्ध' 'अविचलित और निर्भीक' रूप से आगे बढ़ते रहे। फलतः 'अँगुलीमाल' ने क्रोधवश 'महात्मा बुद्ध' की ओर झपटते हुए एक बार फिर से किन्तु अधिक कठोर स्वर में रुकने को कहा।

बुद्ध ने जवाब दिया "मैं तो कब का रुक गया हूँ, तुम कब रुकोगे?" बुद्ध ने उसे समझाया "हमारा उद्देश्य दूसरों का जीवन लेना नहीं अपितु दूसरों को जीवन देना होना चाहिए।" 'महात्मा बुद्ध' की निर्भीकता, साहस और करुणाशीलता को देखकर 'अँगुलीमाल' अ उनके चरणों

आपने प्रासंगिक परिचय लिखा है। आपने परिचय को एक Real story से start किया तथा परिचय के अन्तिम Paragraph में निबंध के विषय को पुनः स्थापित किया है [Re-imposition of Theme of Essay] इसलिए निबंध के परिचय में सार्थकता हो जाती है।

Student Name:
Topic:
Date:

में गिर गया और 'कालान्तर' में एक 'राहजनी और हिंसा' को छोड़कर 'बौद्ध शिक्षा' का अनुपालन करने लगा।

'अँगुलीमाल' की यह कहानी हमें बताती है कि हम क्या हैं? इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हमें क्या होना अथवा बनना चाहिए होता है। इस निबन्ध में हम ऐसे ही कुछ प्रश्नों पर विचार करेंगे यथा क्या स्वंय को खोजने और स्वंय को बनाने से हमारा क्या अभिप्राय होना चाहिए? क्या स्वंय को खोजना तथा स्वंय को बनाना एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न हैं? स्वंय को खोजना और स्वंय को बनाना क्यों आवश्यक है? इसके लिए हमें कौन-से यत्न करने पड़ सकते हैं? तथा क्या जीवन का उद्देश्य कुछ और भी हो सकता है?

अच्छा प्रयास
-Re-imposition of theme
-पुनःस्थापन

Thesis Statement
सही है

Student Name:
Topic:
Date:

IAS Mentorship
With Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

डेनियल गोलमेल ने अपनी पुस्तक इमोशनल इंटेलीजेन्श Why it Can Matter more than IQ में स्वयं को जानने पर विस्तार से चर्चा की है।

जिसका सार यह है कि अपने स्वभाव, प्रकृति, मनोवृत्ति, क्षमताओं, कमजोरियों आदि को जानना तथा यह समझना कि हमारे 'व्यक्तित्व' के इन पक्षों का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। ही स्वयं को जानना है। इसका अर्थ यह है कि हमें अपने व्यक्तित्व के हर पक्ष का सही ज्ञान ही हमें स्वयं से अवगत कराता है।

प्रारंभिक रूप से Perfect statement

जहाँ तक स्वयं को जानने का आशय है तो अलग-अलग दार्शनिकों, तथा विद्वानों ने इसकी व्याख्या अलग-2 रूपों में की है। जहाँ सुखवादी चिंतकों ने मनुष्य को सुखी बनने और हमेशा सुख के लिए प्रयत्नशील रहने की सलाह दी है। वहीं विवेकानंद जैसे नववेदांतवादी विचारक ने "मानव की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।" के विचारों

ACE Scanner

IAS Mentorship
By Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

से प्रेरित होकर गरीबों, भूखे, और ज़रूरतमंद लोगों के सेवा में स्वयं को तल्लीन करने की सीख दी है।

पुनः प्लेटो जैसे विचारक ने मनुष्य को मूलतः सद्गुणी बनने पर बल दिया है। इस क्रम में उन्होंने साहसी, संयमी, न्यायप्रिय तथा विवेकशील मनुष्य की अत्यधिक प्रशंसा की है। यद्यपि मैं व्यक्तिगत रूप से महात्मा बुद्ध के मध्य मार्ग के सिद्धांतों को आज के परिप्रेक्ष्य में अधिक काम्य मानता हूँ। मेरा मत है कि मनुष्य को नैतिक होने के साथ-साथ खुश और सफल बनने का ध्यान देना चाहिये। इस क्रम में किसी भी चीज़ का अतिरेक मनुष्य को उसके प्रकृति से अलग / दूर कर सकता है।

जहाँ तक बात जीवन के उद्देश्य की है तो मेरा मानना है कि मनुष्य का उद्देश्य न तो केवल स्वयं को खोजना है और न ही केवल बनना है।

अच्छा दृष्टांत है आपने निबंध के theme से विभिन्न दार्शनिकों के opinion दिये इसके बाद अपना एक suitable opinion देते हुए logical explanation दिया तथा आरम्भ के एक Quotation को end में जो कि निबंध के हिसाब से प्रासंगिक है तथा निबंध के विषय वस्तु को पुनः स्थापित करता है [Re-imposition of the theme of Essay]

PDF Scanner ACE Scanner

Student Name:
Topic:
Date:

IAS Mentorship
With Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

वस्तुतः स्वयं को खोजना तथा बनना एक ही विषयवस्तु के दो अलग-अलग पहलू है। तथा इस रूप में एक-दूसरे के पूरक माने जासकते है। कोई भी व्यक्ति उसी क्षेत्र में बेहतर कर/बन सकता है जिस क्षेत्र में उसकी अभिरुचि और अभिवृत्ति के बीच पर्याप्त सामंजस्य होता है। और इसके लिये स्वयं पर विचार कर स्वंय की तलाश करना बेहद ही आवश्यक है। इस क्रम में यूनानी दार्शनिक अरस्तू का कथन उल्लेखनीय है– "स्वंय को जानना ही समस्त ज्ञान का आरंभ है।"

Contextually Perfect

logically Correct Argument with a perfect Quotation.

Now objective of life → स्पष्टता (?) पे ज्यादा

अतः यह कहा जा सकता है कि जीवन के दो स्पष्ट उद्देश्य होते हैं – एक स्वंय को खोजना' और दूसरा 'स्वंय को बनाना'। हम यह भी कह सकते हैं कि 'स्वंय को ~~बनाना~~ खोजना' जहाँ 'जीवन' के उद्देश्य का 'पहला चरण' है वहीं 'स्वंय को ~~बनाना~~ ~~खोजना~~ बनाना' इसका दूसरा चरण और वस्तुतः गन्तव्य है। 'स्वामी विवेकानंद'

Student Name:
Topic:
Date:

IAS Mentorship
By Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

से लेकर 'थामस एल्वा एडिसन' के जीवनी और 'दलाई लामा' से लेकर 'स्टीफन हॉकिंग' की यात्रा को स्वंय को खोजने से लेकर बनने की ही बानगी पेश करती है। इस क्रम मे स्वामी विवेकानंद की जीवनी का उल्लेख/वर्णन करना प्रासंगिक प्रतीत होता है।

यह बात सन् 1881 की है जब नरेन्द्र नाथ दत्त नामक एक अट्ठारह वर्षीय नौजवान कलकत्ते के दक्षिण एशिया मन्दिर के दहलीज़ पर पहुँचकर और दरवाजे को खटखटाया। मन्दिर के पुजारी रामकृष्ण परमहंस ने भीतर से प्रश्न किया - कौन है? 'नरेन्द्र' ने जवाब दिया - यही तो जानने आया हूँ गुरुदेव मैं कौन हूँ"।

अंततः स्वंय को जानने व खोजने की इसी आकांक्षा ने 'नरेन्द्र नाथ दत्त' को पहले 'रामकृष्ण परमहंस' का शिष्य तथा फिर 'स्वामी विवेकानंद' के रूप मे एक महान मानवतावादी चिंतक, समाजसेवक, पथ प्रदर्शक

Contextually Connected, Story, explanation with suitable Real life Example.

ACE Scanner

IAS Mentorship
With Reyasat Ali Sir & Team I 9580393900 Call Telegram WhatsApp

Student Name:
Topic:
Date:

तथा युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बना दिया। वस्तुतः 'स्वयं को जानने' और 'समझने' के बाद ही 'नरेन्द्र नाथ दत्त' ने स्वयं को 'मानवतावादी कार्यों' में तल्लीन कर अपना नवनिर्माण किया।

हालांकि इसका अर्थ यह बिल्कुल भी नहीं है कि स्वयं को जानने की तुलना में बनना महत्वहीन अथवा कम महत्व का है। गौरतलब है कि हम क्या हैं? इसकी अभिव्यक्ति स्वयं को जानने की के तुलना में स्वयं को बनाने से अधिक होती है। आज दुनिया में सभी ख्याति प्राप्त व्यक्ति अपने कार्यों और अपने द्वारा स्वयं के व्यक्तित्व के निर्माण के होने के कारण ही जाने जाते हैं। उदा. के लिये आज दुनियाभर में 'थॉमस एल्वा एडीसन' को एक महान वैज्ञानिक के रूप में जाना जाता है। किन्तु इसका मूल कारण उनके द्वारा विद्युत बल्ब से लेकर किए गए सैकड़ों आविष्कार तथा करीब 1000

Analysis, logical discussion

Here you have discussed well how these personalities created themself

पेंटेट को माना जाता है।

'महात्मा गांधी' को 'भारत के राष्ट्रपिता' की संज्ञा दी जाती है तथा न केवल भारत में अपितु दुनियाभर में 'राजनेताओं', 'बुद्धिजीवियों' 'पत्रकारों' और 'युवाओं' के बीच उन्हें "अहिंसा का पुजारी" तथा "सत्याग्रह को पृष्ठ प्रेषक" माना जाता है। इसके लिये भारत की स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उनके द्वारा अपनाए गए तरीके तथा नेतृत्व की अभूतपूर्व कौशल व क्षमता के कारण माना जाता है। आज हम उन्हें इसी रूप में देखते व जानते हैं जैसा उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान स्वयं के व्यक्तित्व का निर्माण किया था।

फिर यह भी सही है कि केवल स्वयं को खोजना तब तक महत्वहीन है जब तक हम स्वयं को स्वयं के अनुरूप बना नहीं देते हैं। आज हममे से अधिकांश लोग स्वयं के जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर अपनी क्षमताओं, सीमाओं और विशेषताओं से अवगत तो हो जाते हैं,

Attributing how M.K. Gandhi Created महात्मा

वर्तमान परिप्रेक्ष्य पे चर्चा, कि लोग क्यों नहीं अपने आप को "क्या पा रहे हैं" सही है

Student Name:
Topic:
Date:

IAS Mentorship
With Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

किन्तु स्वयं को उसके अनुरूप रूपांतरित करने के स्थान पर बने बनाए ढर्रे पर चलते रहते हैं, और शायद यही कारण है कि हममें से अधिकांश लोग समाज पर कोई विशेष छाप नहीं छोड़ पाते हैं।

पर्यावरण संकट, जलवायु परिवर्तन के संबंध में दुनियाभर की सरकारों व आम नागरिकों के दृष्टिकोण व व्यवहार के बीच असंगति को भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। आज शोधों, अध्ययनों व प्राकृतिक आपदाओं के तीव्रता व आवृत्ति में वृद्धि से जलवायु परिवर्तन का स्पष्ट साक्ष्य मिल चुका है। इसके बावजूद विकसित देशों के द्वारा हरित वित्त और हरित प्रौद्योगिकी को हस्तांनांतरित नहीं किया जा रहा है। पुनः आम आदमी भी हरित गृह गैसों के उत्सर्जन, प्लास्टिक प्रदूषण और संसाधनों के दुरूपयोग से होने वाली समस्याओं के

इस Dimension में प्रयास तो अच्छा है लेकिन और बेहतर Connectivity हो सकती है
- Thematically Connected Communication with Clarity

Student Name:
Topic:
Date:

IAS Mentorship
By Reyasat Ali Sir & Team I 9580393900 Call Telegram WhatsApp

प्रति अकादमिक रूप से जागरूक होने के बावजूद व्यवहार में उदासीन बना हुआ है। इन सबके कारण हीटवेव, बाढ़, सूखा और ऊष्ण कटिबंधीय चक्रवातों की आवृत्ति व तीव्रता में काफ़ी वृद्धि हुई है।

गौरतलब है कि आज के इस उपभोक्तावादी दुनिया में नई पीढ़ी स्वयं को खोजने और स्वयं को बनाने जैसे अकादमिक चर्चाओं से दूर रहते हुए जिन्दगी न मिलेगी दोबारा और Life is only once। की धारणा पर चलते हुए जीवन को उत्साह पूर्वक जीने पर बल देते हैं, उनका मत है कि हमें जीवन को जीना चाहिए न कि काटना चाहिए। ऐसे अकादमिक चर्चाओं पर ध्यान देने से हमारा जीवन नीरस ही होगा। ऐसे में भविष्य की बहुत अधिक चिंता किए बिना हमें वर्तमान में जीते हुए अपने जीवन का आनंद लेना चाहिए। मैक्स वेबर ने भी कहा है– "अधिक ज्ञान और अधिक तर्कशीलता जीवन को नीरस बना देती हैं"

ACE Scanner

Student Name:
Topic:
Date:

IAS Mentorship
With Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

ऐसे मे मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि हमें स्वंय के जीवन को सरल व सहज बनाए रखते हुए जीवन के सामान्य सुखों का भोग करते हुए स्वंय की वास्तविकताओं से अवगत होकर स्वंय को इसके ही अनुरूप गढ़ने पर ध्यान देना चाहिए जिससे एक तरफ तो हमारा जीवन सरल व सहज हो सकेगा वहीं दूसरी तरफ हम समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए समाज पर अपना स्पष्ट छाप छोड़ सकेंगे। इस क्रम मे महात्मा गांधी की शिक्षाओं का पालन करते हुए उनके आप्तवचन को जीवन का सूत्र बनाया जा सकता है—

"स्वंय को खोजने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम स्वंय को दूसरों की सेवा मे खो दें"

निष्कर्ष आधा logical discussion Suggestion देते हुए लिखा है तथा अन्त मे thematically suitable Quote एवं end किया है

Perfect

स्वंय को खो जाना

स्वंय को बनाना